देवीपुराण में शिवतत्त्व

देवीपुराण प्राचीन एवं प्रमुखतम शाक्त उपपुराणों में से एक है। वर्तमान देवीपुराण में 128 अध्याय हैं, जबकि कुछ पाण्डुलिपियों में 138 अध्याय हैं। परन्तु विषय-वस्तु एवं श्लोक-संख्या की दृष्टि से सभी पाण्डुलिपियाँ समान प्रतीत होती हैं। महामुनि वसिष्ठ ऋषियों के पूछे जाने पर इस पुराण का प्रवचन करते हैं। कुछ विद्वानों के मत से वर्तमान देवीपुराण संपूर्ण नहीं है। इस पुराण के प्रथम अध्याय में ऋषियों ने कुछ प्रश्न किये हैं जिनमें उन्होंने देवीपुराण के विषयों पर भी प्रकाश डालने की प्रार्थना की है। विषयों की जो सूची वहाँ दी गयी है उसको देखने के बाद यदि हम देवीपुराण के वर्ण्यविषयों पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होगा कि मुख्य रूप से इन्हीं विषय-वस्तुओं का वर्णन वहाँ मिलता है। अतः देवीपुराण की अपूर्णता संबंधी निष्कर्ष उचित प्रतीत नहीं होता। इस पुराण में व्याकरण(यथा सन्धि, समास, छन्द, लिंग, वचन, शब्दरूप, तथा कारक आदि) के नियमों का उल्लंघन अनेक स्थलों पर प्राप्त होता है।

भगवान् शिव का स्वरूप

इस पुराण में सर्वत्र देवी का ही माहात्म्य भरा पड़ा है। इसमें शिवसंबंधी बहुत ही कम संदर्भों की चर्चा की गयी है, और जहाँ कहीं कोई सन्दर्भ आया भी है तो वहाँ बहुत ही संक्षेप में शिव के स्वरूप की चर्चा है। ऐसा होने पर भी, भगवान् शिव सर्वश्रेष्ठ देव हैं, ऐसा निष्कर्ष निकालना पाठक के लिये बहुत ही सरल है।

किसी प्रसंग में ब्रह्मा एवं विष्णु भगवान् शिव की स्तुति में उन्हें सूक्ष्म, श्रेष्ठतम, अनन्त, कारणत्रय(जगत् का निमित्त, उपादानादि कारण अथवा सृष्टि, पालन तथा संहार के कारण), ध्यानगम्य, पराध्यक्ष, सभी भूतों के साक्षी, गुणत्रय(सत्त्व, रज आदि अथवा ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्रस्वरूप), आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी(जिनकी) मूर्ति(हैं), तन्मात्रा, कर्म, बुद्धि तथा इन्द्रियों के विधाता, प्रधान(प्रकृति), पुरुष, आत्मा, नियामकशक्ति, विद्याके जनक, व्यापक, त्रिशूल धारण करनेवाले, कालदण्ड, यमराज का अन्त करनेवाले, कालकूट विष को कण्ठ में धारण करनेवाले, गंगाजल को अपनी जटा में धारण करनेवाले, त्रिपुर एवं काम को जला देनेवाले, भूतों के स्वामी, गजचर्म को धारण करनेवाले, वासुकि एवं अनन्त को मेखला के रूप में धारण करनेवाले, देवदेव, संसार को उत्पन्न करनेवाले, महाकाल, ईश्वर, सदाशिव, सत्य में वास करनेवाले, पशुपति, सर्वेश तथा परमेष्ठी कहते हैं(देवीपु. 7/7-17)। स्तुति के कुछ अंश को देखें-

जय सूक्ष्म परानन्त कारणत्रयतवे।
ध्यानगम्य पराध्यक्ष साक्षिभूत गुणत्रये।।
जय ह्याकाश-वायुवग्नि-तोय-धात्री च मूर्त्तये।।

जय तन्मात्र – कार्मारव्य – बुद्धीन्द्रिय – विधातवे।
जय बुद्धि – मन – गर्व – प्रधानपुरुषात्मने।।
जय डिण्डि महाकाल शम्भुशङ्कर ईश्वर।
जय रुद्र हर घोर सत्यवास सदाशिव।। (देवीपु. 7/7-9, 16)

अर्थात् – सूक्ष्म, अनन्त, पर, कारणत्रय, गुणत्रय, ध्यानगम्य, पराध्यक्ष, साक्षिभूत तथा भगवान् शिव की जय हो। आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी जिनकी मूर्तियाँ हैं, उनकी जय हो। तन्मात्रा, कर्म, बुद्धि तथा इन्द्रियों के विधाता की जय हो। मन, बुद्धि, अहंकार, प्रधान(प्रकृति), पुरुष तथा आत्मास्वरूप भगवान् शिव की जय हो। डिण्डि, महाकाल, शम्भु, शंकर तथा ईश्वर की जय हो। रुद्र, हर, घोर, सत्य में वास करनेवाले तथा सदाशिव की जय हो।

इस पुराण के दसवें अध्याय में योग – शास्त्र का दस परिच्छेदों में वर्णन हुआ है। योगशास्त्र के दूसरे परिच्छेद में एक स्थल पर कहा गया है कि जो श्रेष्ठ है, सभी भूतों के कारणों का कारण है, उस ईशान शिव को जानकर व्यक्ति निर्वाण को प्राप्त कर लेता है।

यः श्रेष्ठः सर्वभूतानां कारणानाञ्च कारणम्।
तमीशानं शिवं ज्ञात्वा नरो निर्वाणमर्हति।। (देवीपु. 10/2/4)

आगे योगशास्त्र के दसवें परिच्छेद में शिव को निर्गुण, मन से अग्राह्य, अनुपमेय, प्रकाशमान, प्रधान, पुरुष, ईशान तथा सभी भूतों का स्वामी कहा गया है। उन्हें सर्वगत, सर्वज्ञ, सबका कारण तथा अक्षत – ऐश्वर्य – सम्पन्न भी कहा गया है।

निर्गुणं मनसाग्राह्यमनौपम्यं महाद्युतिम्।
प्रधानपुरुषेशानं सर्वंभूतपतिं शिवम्।।
अनुत्पाद्यं सर्वगतं सर्वज्ञं सर्वकारणम्।
अक्षतैश्वर्य – सम्पन्नं देवमेकं महेश्वरम्।। (देवीपु. 10/10/5, 8)

किसी प्रसंग में शुक्राचार्य अपनी स्तुति में भगवान् शिव को ब्रह्मा, उपेन्द्र, मरुद्गण, वसुगण, विद्याधर, मुनि तथा दैत्यगण द्वारा पूजित, चराचर जगत् में व्याप्त, विश्वात्मा, कारणों का कारण, पशुपति, परमदेव, अमरत्व, धर्म, अर्थ आदि को प्रदान करनेवाले, चन्द्रमा के समान उज्ज्वल, लौकिक सुख एवं स्वर्ग प्रदान करनेवाले, परमकारण, सुरासुरगुरु, लोकाधिपति, सर्वज्ञ, प्रभु, ईश्वर, त्रिनयन, सर्वात्मा, परापरज्ञ तथा योगेश्वर आदि कहा है। (देवीपु. 33/9-12, 18, 24-25, 39)

व्याप्तं येन चराचरं जगदिदं विश्वात्मना मूर्तिभिः।
कस्तं कारण – कारणं पशुपतिं देवं परं नार्च्चयेत्।।
देवं सर्व्वसुरासुर प्रणमितं शम्भुं परं कारणम्।।
ये लोकाधिपति सुरासुर गुरुं ब्रह्मेन्द्र सम्पूजितम्।

.....।

सर्व्वज्ञं प्रभुमीश्वरं त्रिनयनं सर्व्वात्मना भाविताः।। (देवीपु. 33/11, 24-25)

भावार्थ यह है कि जिस विश्वात्मा की मूर्तियाँ इस चराचर जगत् में व्याप्त हैं उस कारणों के कारण श्रेष्ठ पशुपति की क्यों नहीं अर्चना करते। परम कारण शंभु सुरासुर सभी के द्वारा प्रणाम किये जाते हैं। वे सर्वज्ञ प्रभु त्रिनयन एवं सर्वात्मा हैं।

ऊपर के उद्धरण भगवान् शिव को परमतत्त्व या ब्रह्म सिद्ध करते हैं। इनमें भगवान् शिव के निर्गुण एवं सगुण दोनों ही रूपों का संकेत है। उन्हीं से सम्पूर्ण चराचर, देव-दानव, ब्रह्मा-विष्णु आदि की सृष्टि होती है, उनके द्वारा ही उनका पालन तथा अन्त में संहार होता है। क्योंकि वे सबके कारण, बल्कि कारणों के भी कारण हैं। वे धर्म, अर्थ आदि प्राप्ति करानेवाले हैं अर्थात् वे लौकिक सुख, स्वर्ग एवं मोक्ष को प्राप्त करानेवाले हैं। उनका ज्ञान ही मोक्ष कहलाता है।

शिवोपासना

ऊपर कहा जा चुका है कि सभी भूतों में श्रेष्ठ तथा कारणों के कारण ईशान शिव को जानकर व्यक्ति निर्वाण को प्राप्त कर लेता है (देवीपु. 10/2/4)। भगवान् शिव का ज्ञान (या उनकी प्राप्ति) ही निर्वाण या मोक्ष कहलाता है। योगसाधना के प्रकरण में कहा गया है कि ज्ञान से वैराग्य, वैराग्य से धर्मसंचय, धर्म से योग और योग से महेश्वर के गुणों की प्राप्ति (अर्थात् मुक्ति) होती है।

ज्ञानाद् भवति वैराग्यं वैराग्याद् धर्मसञ्चयः।
धर्माच्च योगो भवति योगान्माहेश्वरा गुणाः।। (देवीपु. 10/1/15)

इसी प्रकरण में आगे कहा गया है कि आत्मा ध्याता, मन ध्यान का आश्रय तथा सूक्ष्म महेश्वर ध्येय है।

आत्मा ध्याता मनो ध्यानं ध्येयः सूक्ष्मो महेश्वरः। (देवीपु. 10/6/6)

पुनः कहा गया है कि शुद्ध मन एवं चित्त से स्थिरतापूर्वक टिके रहकर परापरस्वरूप शिव को प्रणाम करे। उसमें चित्त को तन्मय कर निष्ठा से उसके परायण हो जाने से योगाग्नि द्वारा सभी दोषों का नाश हो जाता है और वह शाश्वत शिव का दर्शन पाता है। और उसके दर्शन से शिव के समान गुणों की प्राप्तिरूप सिद्धि मिलती है तथा जन्म एवं मोह के बन्धनों से वह मुक्त हो जाता है।

निर्गुणं मनसा ग्राह्यमनौपम्यं महाद्युतिम्।
प्रधानपुरुषेशानं सर्वभूतपतिं शिवम्।।
स्थितं स्थितेन मनसा शुद्धं शुद्धेन चेतसा।
परापरस्वरूपेण यत्सूक्ष्ममुपनयेत् पुनः।।
तच्चित्तस्तन्मयो युक्तस्तन्निष्ठस्तत्परायणः।
दोषैर्योगाग्निनिर्दग्धैः शिवं पश्यति शाश्वतम्।।

अनुत्पाद्यं सर्वगतं सर्वज्ञं सर्वकारणम्।
अक्षतैश्वर्य – सम्पन्नं देवमेकं महेश्वरम्।।
यं दृष्ट्वा लभते सिद्धिं समानगुणलक्षणम्।
यं दृष्ट्वा जन्म – मोहाभ्यां नैव संयुज्यते पुनः।। (देवीपु. 10/10/5-9)

भगवान् शिव के लिंग की पूजा ब्रह्मा, विष्णु, मरुद्गण, इन्द्र, वसु तथा विद्याधर आदि द्वारा आदरपूर्वक की जाती है।

ब्रह्मोपेन्द्र मरुन्महेन्द्र वसुभिर्विद्याधरैः सादरैः।
लिङ्गं यस्य सदार्च्चितं मुनि गणैरन्यैश्च दैत्यादिभिः।। (देवीपु. 33/9)

भगवान् शिव की उपासना से तीनों लोक का राज्य, अमरता, धर्म, अर्थ तथा कामादि सभी कुछ प्राप्त हो सकता है। अर्थात् शिवोपासना से भोग एवं मोक्ष दोनों प्राप्त हो सकता है (देवीपु. 33/11-12)। शिव की प्रसन्नता से सिद्धों को रसायन द्रव्य सुलभ हो जाता है (वही 33/22)। जो लोग शिव की शरणागति को ग्रहण कर अन्य कार्यों को छोड़कर तीनों काल (सुबह, दोपहर तथा शाम) में शिव की अर्चना, जप तथा होमकार्य करते रहते हैं वे नाना प्रकार के ऐश्वर्य एवं भोगों को भोगकर काल की गति से कर्मों के क्षय हो जानेपर ऐश्वर्य सम्पन्न राजा के रूप में पैदा होते हैं।

ये सर्व्वे शरणागताः सुपुरुषास्त्यक्तान्यकार्य्या दशा।
त्रैकाल्यार्च्चन जप्य होमनिरताद्रोगादिभि र्वर्जिताः।।
ते भोगान् विविधाननुभूय सकलान् कालेन कर्म्मक्षयाद्।
वित्तैश्वर्य्यसमन्विताः क्षितितले जायन्ति ते भूमिपाः।। (देवीपु. 33/23)

जो लोग सुरगुरु भगवान् शिव की पूजा करते हैं उनका नाना योनियों में भटकना समाप्त हो जाता है (वही 33/25)। इसके विपरीत जो लोग उनकी उपासना नहीं करते वे सदा दीन-दुःखी रहते तथा वे धरती पर जन्म लेते रहते हैं (वही 33/24)। जो लोग प्रतिदिन भावपूर्वक कपूर, अगरु, चन्दन, दुग्ध-स्नान आदि द्वारा विधिपूर्वक शिवजी की अर्चना करते हैं वे सभी भोगों को भोगकर दिव्यपद को प्राप्त करते हैं।

ये त्वन्ये सुकृतैषिणः प्रतिदिनं प्रोत्थाय भावान्विताः।
कर्पूरागरुचन्दनैः सुरुचितैः स्रगभिस्तथा भूषणैः।।
क्षीरादिस्नपनैर्विधानविहितैः कुर्वन्ति शर्व्वार्च्चनम्।
भोगान् सर्व्व गतानुभूय सुधियो गच्छन्ति दिव्यं पदम्।। (देवीपु. 33/26)

जो कुपथगामी, जड़बुद्धि तथा मूर्ख शान्त, अजन्मा तथा प्रधान पुरुष शिव की मोहवश निन्दा करता है वह मृत्यु के उपरान्त यमराज के नाना दूतों द्वारा यातना पाकर क्रन्दन करता हुआ बलात् नरक को प्राप्त होता है।

ये केचित् कुपथाश्रिता जडधियो मन्दाममज्ञाः शठाः।
देवं शान्तमजं प्रधानपुरुषं निन्दन्ति मोहाच्छिवम्।।
मृत्योद्गोचरमागताः यम भटैर्नानाविधैः शासनैः।
शाम्यन्ते नरकेषु ते प्रतिवलैश्चाक्रन्दमाणा भृशम्।। (देवीपु. 33/27)

आगे कहा गया है कि जो दुष्ट पुरुष शिव से द्वेष या उनकी निन्दा करते हैं वे अधोगति को प्राप्त करते हैं, वे तामिस्र, क्रकच, असिपत्र, कुम्भी तथा महारौरव नरक को जाते हैं, वे हजारों योनियों में दुःख को भोगते हुए रोगी, जड़, वासनान्ध, वधिर एवं दुष्ट मनुष्य के रूप में पैदा होते हैं।

द्वैष्टारस्तु शिवस्य ये कुपुरुषा गच्छन्ति तेऽधोगतिम्।
तामिस्रे क्रकचासिपत्र नरके कुम्भी महारौरवे।।
योनि मार्ग सहस्त्र खिन्नगमनाः प्राप्येह मानुष्यकम्।
रोगार्तो जड़ वासनान्धवधिरा जायन्ति योनौ खलाः।। (देवीपु. 33/29)

संसार को क्षणिक जानकर सदैव शिव की शरण लेनी चाहिये(वही 33/30)। जिन्होंने न दान दिया है, न वेद पढ़ा है तथा जो न शील, सत्य, तप एवं कीर्त्ति से सम्पन्न हैं, उनका कल्याण बिना शिव की आराधना के संभव नहीं(वही 33/31)।

जो लोग शिव के चरणकमलों का संसर्गवश या उत्सुकता अथवा कौतुक से एक क्षण के लिये भी स्मरण करता है, जप करता है, तो उसे ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु वा कुबेर का लोक प्राप्त हो जाता है। और जो शान्त भाव से उन्हें समर्पित होकर सतत प्रणाम करता है, वह सभी क्लेशों से छूटकर अन्त में रुद्रतेज में लीन हो जाता है।

संसर्गात् कौतुकाद्वा क्षणमपि यैः जप्तं पादेषु पद्मेषु शम्भो।
याति ब्रह्मेन्द्र विष्णु द्रविणपति पुरांस्त्रीनति क्रम्य लोकान्।।
शान्त्या भावेन यस्तं प्रणमति सततं सर्व्व विन्यस्त सर्गी।
संछिन्न क्लेश पाशैः प्रविशति विरजो रुद्र तेजो निधानम्।। (देवीपु. 33/36)

जो मनुष्य रागमुक्त होकर परापरज्ञ, योगेश्वर एवं देवताओं के गुरु शिवजी का सतत स्मरण करते हैं वे ध्यान द्वारा पाप एवं मोहजाल से मुक्त होकर जन्म-मरण के चक्र से छूट जाते हैं।

ये मानवा विगतराग परापरज्ञा योगेश्वरं सुरगुरुं सततं स्मरन्ति।
ध्यानेन ते प्रहत किल्बिष मोहजाला मातुः पयोधर रसं न पुनः पिवन्ति।।
(देवीपु. 33/39)

अन्त में कहा गया है कि वह शरीर उत्तम है जो सदैव भगवान् शिव को प्रणाम करता है, वे नेत्र सुन्दर हैं जो शिव का दर्शन करते हैं, वह बुद्धि उत्तम है जो शंकर का ध्यान करती है तथा वह जिह्वा मृदुभाषी तथा हितकारी है जो नित्य शिव की स्तुति करती है। वह चित्त कुशल है जिसमें शिव

निश्चल रूप से स्थित हैं, वे कान श्रेष्ठ हैं जो शिवामृत रस का श्रवण करते हैं, वे हाथ श्रेष्ठ हैं जो शिवसंबंधी धर्म-कर्म तथा पूजा में रत रहते हैं तथा वे पैर श्रेष्ठ हैं जो भावपूर्वक शिव की प्रदक्षिणा में नित्य रत रहते हैं।

तद् गात्रं प्रणिपातरेणुधवलं सर्व्वस्य यत् सर्व्वदा।
ते नेत्रे तपसार्ज्जिते सुरुचिरे ताभ्यां हरो दृश्यते।।
सा बुद्धिर्विमलेन्दु शङ्ख धवला या शङ्करध्यायिनी।
सा जिह्वा मृदुभाषिणी हितकरी या स्तौति नित्यं शिवम्।।
तच्चित्त चपलं चिनोति कुशलं यन्निश्चलं शङ्करम्।
ते श्रोत्रे परमे शिवामृतरसं याभ्यां हरः श्रूयते।।
ते हस्ताः शिव धर्म्मं कर्म्मं निरताः पूजा प्रमाणोत्सुका।
तौ पादौ समयौ प्रदक्षिणरतौ नित्यं विभोर्भावितौ।। (देवीपु. 33/40-41)

इस पुराण में नाना प्रकार के पुष्पों से की गयी शिवपूजा का फल बताया गया है। वैशाख मास में पाटला तथा ज्येष्ठ में कमल एवं अर्जुन द्वारा शिव की पूजा से सभी कामनायें पूरी होती हैं। आषाढ़ में बिल्व एवं कल्हार(सायंकाल में फूलनेवाला श्वेतकमल), श्रावण में नोमाली तथा भादों में कदम्ब एवं चम्पा से की शिवपूजा से सभी कामनायें पूरी होती हैं। अश्विन मास में कमल की माला से तथा कार्तिक मास में शतपत्र(कमल) के फूलों से शिव की अर्चना से सभी कामनायें पूरी होती हैं। मार्गशीर्ष में नीलोत्पल, पुष्य मास में कुंज तथा कजा, माघ में कुन्द तथा फाल्गुन में मरुपत्र तथा माधवी से की शिवपूजा शुभदायक होती है। चैत्र मास में वस्त्र, गंध एवं पुष्प से की जानेवाली शिव-पूजा से व्यक्ति को सुवर्ण, गाय, भूमि, वस्त्र, अन्न तथा विद्यादान का फल प्राप्त होता है तथा उसे वाजपेय एवं सैकड़ों राजसूय यज्ञों का फल प्राप्त होता है।

वैशाखे तु प्रकर्त्तव्या पूजा पाटलजैः स्रजैः।
सर्व्वकाममवाप्नोति ज्यैष्ठे पद्माज्र्जुनैस्तथा।।
अषाढे बिल्वकल्हारैरिहितं लभते फलम्।
नोमालीकुसुमैः पूजा न मे कार्य्या महाफला।
कदम्ब चम्पकैरीषे सर्व्वकाम फलप्रदा।।
पूजा पङ्कजमालाभ्यां सर्व्वाभ्युदयदायिका।
शतपत्रिकया पूजा कार्त्तिके सर्व्वकामिका।।
मार्गे नीलोत्पला पूजा पुष्ये कुंज कजास्तथा।
माघे कुन्दकृता पूजा सर्व्वकाम प्रदायिका।।
फाल्गुने मरुपत्रोत्था माधवी शुभदायिका।

एवं संवत्सरं चैत्र्यां यः कुर्याद् ग्रहसत्तम।।
गन्धपुष्पान्न वस्त्रैश्च तस्य पुण्यफले शृणु।
हेमगो भूमि वस्त्रान्न विद्यादान फलं लभेत्।।
वाजपेय महामेध राजसूय शताधिकम्।
.....।। (देवीपु. 62/1-7)

इस पुराण के 63 वें अध्याय(श्लोक 2-17) में शिव के मान्य तीर्थों तथा उन तीर्थों से संबंधित भगवान् शिव के 68 नामों का वर्णन किया गया है। इन तीर्थों तथा उनके नामों का प्रातःकाल उठकर स्नान आदि से पवित्र होकर पाठ करने से व्यक्ति सभी पापों से छूटकर शिवलोक को प्राप्त करता है।(देवीपु. 68/18)

इस पुराण के 76 वें अध्याय में शिवसंबंधी कुछ तीर्थों जैसे काशी, नर्मदा, केदार तथा कुरुक्षेत्र आदि के माहात्म्य की भी चर्चा है। उदाहरण के लिये रामेश्वर ब्रह्महत्या को दूर करनेवाला, कुरुक्षेत्र सभी पापों को दूर करनेवाला तथा काशी तथा मायापुरी अनन्त पुण्य देनेवाला तीर्थ है।

इस पुराण में भगवान् शिव से संबंधित कुछ स्तोत्र दिये गये हैं जिनमें से शुक्राचार्यकृत स्तोत्र महत्त्वपूर्ण है। इसके प्रतिदिन के पाठ से व्यक्ति को यज्ञों का फल प्राप्त होता है, मनोवांछित लक्ष्य की पूर्ति होती है तथा अन्त में भगवान् शिव के शाश्वत पद को व्यक्ति प्राप्त करता है। यह स्तोत्र इस पुराण के 33 वें अध्याय(श्लोक 6-43) में है। इच्छुक पाठक वहाँ देख लें।

सभी प्रमुख ग्रन्थों में भगवान् शिव को अर्द्धनारीश्वर कहा गया है। अर्थात् पार्वती उनके आधे अंग में विराजमान रहती हैं। शिव सदैव शक्तियुक्त होते हैं। शिव-शक्ति का अद्वैत ही परम तत्त्व है। जो शिव हैं वही शक्ति हैं। शिव-शक्ति की एकरूपता का संकेत इस पुराण में भी मिलता है। एक स्थल पर कहा गया है कि जो नन्दा(देवी का या शक्ति का एक रूप) हैं वही साक्षात् शिव हैं, इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है। नन्दा का शिव से तादात्म्य बतलाने के बाद कहा गया है कि नन्दा से बढ़कर कोई न तो ध्यान है न तप और न ही तीर्थ।

या नन्दा सा शिवः साक्षान्नन्दारूपधरः शिवः।
उभयोरन्तरं नास्ति नन्दायास्तु शिवस्य च।।
न नन्दापरमं ध्यानं न नन्दापरमं तपः।
न नन्दापरमं तीर्थं शिवः साक्षात् प्रभाषते।। (देवीपु. 95/39-40)

इस पुराण में देवी की महिमा को ही सर्वत्र प्रधानता दी गयी है। परन्तु अगर हम देवी को शिव से अभिन्न मानते हैं तो देवी की महिमा का वर्णन प्रकारान्तर से शिव की ही महिमा का वर्णन है। ऊपर का दिया गया उदाहरण देवी एवं शिव की अभिन्नता को सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है।

उपसंहार

वर्तमान देवीपुराण, जो शाक्तों का एक प्राचीन उपपुराण है, में 128 अध्याय हैं। इस पुराण में व्याकरण के अनेक नियमों, यथा सन्धि, समास, छन्द, लिंग, वचन, कारक तथा शब्दरूपों आदि का उल्लंघन अनेक स्थानों पर प्राप्त होता है।

इस पुराण में शिव संबंधी बहुत ही कम प्रसंग पाये जाते हैं। परन्तु जो प्रसंग प्राप्त होते हैं उनसे भगवान् शिव सर्वश्रेष्ठ देव तथा परब्रह्म अथवा परमतत्त्व सिद्ध होते हैं। ब्रह्मा एवं विष्णु शिव की स्तुति में उन्हें श्रेष्ठतम, अनन्त, कारणत्रय, सभी भूतों के साक्षी, गुणत्रय, प्रधान(प्रकृति), पुरुष, आत्मा, नियामकशक्ति, कालदण्ड, यमराज का अन्त करनेवाले, कालकूट एवं गंगा को धारण करनेवाले, देवदेव, संसार को उत्पन्न करनेवाले, महाकाल, ईश्वर, सदाशिव, सत्य में निवास करनेवाले, सर्वेश, परमेष्ठी, तथा वासुकि एवं अनन्त को मेखला के रूप में धारण करनेवाले आदि-आदि कहते हैं।

शिव को सभी से श्रेष्ठ, सभी भूतों के कारणों के कारण, निर्गुण, मन से अग्राह्य, अनुपमेय, प्रकाशमान तथा सभी भूतों का स्वामी भी कहा गया है। उन्हें जानकर व्यक्ति निर्वाण को प्राप्त कर लेता है।

उन्हें ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु, मरुद्गण, वसुगण, विद्याधर, मुनि तथा दैत्यगण आदि द्वारा पूजित, विश्वात्मा, अमरत्व, धर्म, अर्थ आदि को प्रदान करनेवाला, परम कारण, सुरासुरगुरु, लोकाधिपति, सर्वात्मा, योगेश्वर तथा परापरज्ञ आदि भी कहा गया है।

भगवान् शिव का ज्ञान या उनकी प्राप्ति ही निर्वाण कहलाता है। योग का लक्ष्य शिवतत्त्व की प्राप्ति है। ध्यान का विषय भी भगवान् शिव हैं। शिव को प्रणाम करने तथा उनमें चित्त को तन्मय कर उनपर आश्रित हो जाने से योगीजनों के सभी दोष नष्ट हो जाते हैं और वे शिव का दर्शन पाते हैं फलस्वरूप वे जन्म एवं मोह के बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं।

भगवान् शिव के लिंग की पूजा ब्रह्मा, विष्णु, मरुद्गण, इन्द्र, वसु तथा विद्याधर आदि द्वारा आदरपूर्वक की जाती है। शिवोपासना से त्रिलोकी का राज्य, अमरता, धर्म, अर्थ कामादि सभी-कुछ प्राप्त हो सकता है। शिवलिंग की पूजा विविध उपचारों से करनेवाले को भी भोग, स्वर्ग एवं शिवत्व की प्राप्ति होती है। जो लोग शिवोपासना नहीं करते, उन्हें दुःख एवं बार-बार जन्म-मरण प्राप्त होता रहता है। जो शिव के चरणकमलों का संसर्गवश या उत्सुकतावश भी एक क्षण के लिये भी स्मरण करता है अथवा जप करता है तो उसके सभी क्लेश समाप्त हो जाते हैं तथा अन्त में वह रुद्रतेज में लीन हो जाता है।

जो लोग मोहवश शिव की निन्दा करते हैं वे नाना प्रकार के घोर नरकों में जाते हैं तथा यमयातना भोगने के बाद रोगी, जड़, बधिर तथा दुष्ट मनुष्य के रूप में पैदा होते हैं। वही व्यक्ति उत्तम है जिसका शरीर शिव को प्रणाम करने के लिये झुकता है तथा जिसके कान, हाथ, जिह्वा आदि

इन्द्रियाँ शिव से संबंधित विषयों का सेवन करती हैं। इस पुराण में अलग-अलग महीनों में अलग-अलग प्रकार के फूलों से शिर्वाचन करने के फल को भी बताया गया है। जैसे आषाढ़ में बिल्व, भादों में कदम्ब, फाल्गुन में माधवी आदि से पूजन करने पर सभी प्रकार की कामनायें पूरी होती हैं। इस पुराण में शिव के 68 नामों तथा उनसे संबंधित तीर्थों का भी नामोल्लेख है जिसका पाठ पापों से मुक्ति दिलाकर शिवलोक को प्राप्त कराता है। काशी, नर्मदा, केदार एवं कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों के माहात्म्य की भी चर्चा की गयी है।

यह पुराण मूल रूप में देवी की महिमा को बतलानेवाला है। परन्तु इसमें शिव को देवी या शक्ति से अभिन्न भी बताया गया है। अतः देवी की महिमासंबंधी जो कुछ भी बातें हमें इस पुराण में प्राप्त होती हैं वे प्रकारान्तर से शिव की ही मानी जानी चाहिये।

(यह लेख डॉ0 पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा संपादित तथा श्रीलालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठम्, दिल्ली द्वारा 1976 में प्रकाशित 'देवीपुराणम्' की प्रति पर आधारित है।)

s s s s s s s s

आचार का महत्त्व

बिना सदाचार के किसी भी प्रकार की भक्ति, साधना अथवा धार्मिक-कृत्य निष्फल होते हैं। नारदमहापुराण में कहा गया है-

वेदो वा हरिभक्तिर्वा भक्तिर्वापि महेश्वरे।
आचारात्पतितं मूढं न पुनाति द्विजोत्तम।।
पुण्यक्षेत्राभिगमनं पुण्यतीर्थनिषेवणम्।
यज्ञो वा विविधो ब्रह्मंस्त्यक्ताचारं न रक्षति।।
आचारत् प्राप्यते स्वर्ग आचारात्प्राप्यते सुखम्।
आचारात्प्राप्यते मोक्ष आचारात् किं न लभ्यते।।

(नार. महापु. पूर्वखण्ड 4/25-27 तथा बृहन्नारदीय पु. 4/11)

अर्थात्-वेद, श्रीहरि की भक्ति अथवा भगवान् महेश्वर की भक्ति भी आचार से पतित मूढ़ की रक्षा नहीं कर सकती। पुण्यक्षेत्र तथा तीर्थों का सेवन तथा विविध प्रकार के यज्ञ आचारहीन की रक्षा नहीं कर सकते। आचार से स्वर्ग, सुख तथा मोक्ष क्या कुछ नहीं प्राप्त हो सकता? अर्थात् आचार से ही सभी कुछ प्राप्त होता है।